A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320-7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

गुरमत संगीत परंपरा उद्गम एवं विकास

Amandeep Singh[1], Dr. Kulvinder Singh[2]

1 Researcher, Lovely Professional University
2 Associate Professor, Lovely Professional University

Read the Article Online

Cite this Article

Published on 15 June, 2026

Singh, A. and Singh, K. (2026). Gurmat Sangeet Parampara Udgam Evam Vikas. Swar Sindhu, 14(1), 332-337.

OPEN ACCESS CC BY

सार

गुरमत संगीत की पहचान एक आज़ाद और असली परंपरा के तौर पर बनी है। इसका सबूत यह है कि गुरमत संगीत को स्कूल, कॉलेज और यूनिवर्सिटी में एकेडमिक लेवल पर एक सब्जेक्ट के तौर पर लागू किया गया है। जिससे गुरमत संगीत में म्यूज़िकल जॉनर और रागों की ट्रेनिंग और रिसर्च के नज़रिए से पढ़ाई हो रही है, जो गुरमत संगीत के विकास के लिए कंस्ट्रक्टिव कोशिशें हैं। हालांकि गुरमत संगीत की शबद कीर्तन परंपरा सिख धर्म का एक बुनियादी हिस्सा रही है, लेकिन फिर भी इसके प्रैक्टिकल रूप की असलियत में कई बदलाव आए हैं। कुछ हद तक, गुरुओं से विरासत में मिली शबद कीर्तन की परंपरा, गुरमत संगीत, अपने मूल से भटककर कई धाराओं में बहने लगी। गुरमत संगीत परंपरा का उद्गम एवं विकास एक आध्यात्मिक यात्रा रही है यह केवल धार्मिक अनुष्ठान की विधि ही नहीं बल्कि आत्मा को जागृत करने वाली एक आध्यात्मिक साधना, एक दर्शन और एक जीवन पद्धति बन चुकी है| श्री गुरु नानक देव जी से आधुनिक समय तक इस संगीत परंपरा ने न केवल सिख धर्म की आत्मा को जीवित रखा है बल्कि संगीत और आत्मा के अध्यात्म के अद्वितीय संगम का उदाहरण प्रस्तुत किया है|

मुख्य शब्द: *गुरमत संगीत, सिख धर्म, श्री गुरु नानक देव जी।*

परिचय

भारतीय आध्यात्मिक संगीत परंपरा में गुरमत संगीत की शुरुआत और विकास सिख धर्म के संस्थापक और पहले गुरु, श्री गुरु नानक देव जी के साथ शुरू हुआ। गुरु नानक देव जी के समय, भारतीय परंपरा आध्यात्मिक, सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर काफी कम हो गई थी और समाज को रास्ता दिखाने वाले हर क्षेत्र के नेताओं ने अपनी पहचान खो दी थी। गुरमत संगीत सिख धर्म की आध्यात्मिक परंपरा का अनिवार्य अंग है| जो गुरुओं की वाणी के माध्यम से आत्मा और परमात्मा के मिलन को संगीत की अभिव्यक्त देता है| यह केवल एक भक्ति प्रधान संगीत शैली ही नहीं अपितु यह एक दर्शन भी है जो भारतीय संगीत परंपरा के भीतर एक विशिष्ट स्थान रखता है| यह शोध पत्र गुरमत संगीत के ऐतिहासिक विकास राग व्यवस्था वाद्य यंत्र और धार्मिक सांस्कृतिक प्रभावों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है|

सिख धर्म का पवित्र संगीत, गुरमत संगीत, सिखों की धार्मिक और सांस्कृतिकपहचान में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस समृद्ध संगीत परंपरा में, गुरमत संगीत गायन शैलियाँ एक अद्वितीय और आवश्यक घटक का प्रतिनिधित्व करती हैं। यह शोध पत्र गुरमत संगीत परंपरा उद्गम एवं विकास ऐतिहासिक महत्व, विकास और समकालीन प्रासंगिकता का अन्वेषण करता है, और संगीत के माध्यम से सिख धर्म के आध्यात्मिक सार को संरक्षित और प्रचारित करने में उनकी भूमिका पर बल देता है। यह शोध पत्र इन शैलियों की विशिष्ट विशेषताओं, सिख उपासना में उनकी भूमिका और सिख समुदाय की संगीत विरासत पर उनके प्रभाव का गहन अध्ययन करता है।

इतिहास:

गुरमत संगीत का इतिहास 16वीं शताब्दी का है जब सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक देव जी ने भजनों की रचना की थी जिन्हें बाद में गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल किया गया। इन भजनों के साथ संगीत का प्रदर्शन शुरू में पारंपरिक भारतीय वाद्ययंत्रों, जैसे रबाब, का उपयोग करके किया जाता था। रबाब एक तार वाला वाद्य यंत्र है जिसकी उत्पत्ति मध्य एशिया में हुई थी। धनुष से बजाया जाने वाला रबाब, ध्यानपूर्ण और आत्मनिरीक्षणात्मक स्वर वाला भक्ति संगीत प्रदान करता था।

सिख धर्म की शुरुआत श्री गुरु नानक देव जी से हुई। श्री गुरु नानक देव जी के समय समाज में गिरावट बहुत कम हो गई थी, जिसे देखते हुए गुरु साहिब ने लोगों को 'एक अकाल पुरख, 'नाम जप, 'वंड चक्कन और 'किरत करण सिखाकर भगवान का आध्यात्मिक संदेश दिया। इस भलाई के काम के लिए, उन्होंने लोगों को आध्यात्मिक सोच के ज़रिए रास्ता दिखाने के लिए चार उदासी के रूप में देशांतर शुरू किए। डॉ. बलबीर सिंह के

अनुसार, “गुरु नानक की माया के पर्दे के पीछे मरदाना से जो दोस्ती थी, हुनर के घर में एक सुर था, उनकी आवाज़ भी एक सुर थी, उनका मन भी एक सुर हो गया, उनका बंधन गुरु का बंधन था।

इस तरह गुरु नानक देव जी जहाँ भी जाते, रबाब की आवाज़ से ‘रब का हुक्म गूंजाते, जिससे नानक की बातें लोगों के मुँह में चली गईं और कीर्तन का रुझान अपने आप बहने लगा, जिसका ज़िक्र हमें भाई गुरदास जी के पदों में मिलता है:

हर घर में एक धर्मशाला हो, और कीर्तन हमेशा वहाँ हो।

गुरु साहिब की ज़रूरी रचनाओं में दुपड़े, टिपड़े, चौपड़े, पंचपड़े, छिपड़ा, अष्टपदी, पहरे, वरन, सोदर, पट्टी, छंट, आरती, कूचाजी$सुचाजी, थीती, सोलहे, बारामाह, ओंकार वगैरह हैं। ये सनातनी और देसी हैं। काव्य के अनुसार रचनाओं को गाने के लिए रागों का इस्तेमाल किया गया। गुरु साहिब ने बानी को इन 19 मुख्य रागों और 17 रागों के तहत बनाया:

मुख्य राग: सिरी (14), माझ (109), गौरी (151), आसा (347), गुजरी (289), वधांस (557), सोरठी (595), धनश्री (660), तिलंग (721), सुही (728), बिलावल (795), रामकली (876), मारू (989), तुखारी (1107), भैरव (1125), बसंत (1168), सारंग (1197), मल्हार (1254), प्रभाती (1327)।

राग: गौरी गुआरेरी (151), गौरी दखनी (152), गौरी चेटी (151), गौरी बैरागना (157), गौरी पूर्वी दीपकी (157), गौरी दीपकी (12), गौरी पूर्बी (242), आसा काफी (418), वधांस दखनी (580), सूही काफी (751), बिलावल दखनी (843), रामकली दखनी (929), मारू काफी (1014), मारू दखनी (1033), बसंत हिंडोल (1171), प्रभाती बिभास (1372), प्रभाती दखनी (1343)। इस तरह गुरु नानक देव जी ने सिख धर्म में एक अनोखी और असली कीर्तन परंपरा शुरू की, जिसे पीढ़ी दर पीढ़ी दूसरे गुरुओं ने भी अपनाया।

- श्री अंगद गुरु वगैरह सभी रस्में निभाते थे। वे आधी रात को उठते थे और बांसुरी बजाते थे।
- वे सुबहण्सुबह आते थे और फिर सभा का मज़ा लेते थे। वे उम्मीद और प्यार से गुरु की कहानी सुनते थे।
- उन्होंने अपने भाई बाले के साथ गुरु की कहानी सुनी। सिख संत और बड़े संत इसे बड़े मज़े से सुनते थे।
- उन्होंने गुरमुखी लिखी और फिर गुरु को सिखाया। उन्होंने गुरु की बानी और कथा प्यार से लिखी।

शबद कीर्तन करते हुए उन्होंने इसे प्रैक्टिकल तौर पर फैलाने के लिए एक दूसरा कीर्तन सेंटर श्खडूर साहिबश् बनायाए जिसका ज़िक्र श्री गुरु ग्रंथ साहिब में है फिर उन्होंने फेरुआं सतगुरु खडूर की स्थापना की।

श्री गुरु ग्रंथ साहिबए पेज 867

शबद कीर्तन के रोज़ाना के प्रोग्राम में, आसा दी वार के अलावा, सुबह और शाम रबाबियों द्वारा किया जाने वाला एक सुंदर कीर्तन होता था। इस तरह, शबद कीर्तन के समय के हिसाब से रेगुलर दीवान और कीर्तन चौकियां बनाई गईं। उस समय, भाई मर्दाना के बेटे सजादा, सादू और बदू, भाई सत्ता और भाई बलवंड ने रबाब की मदद से सुबह और शाम शबद कीर्तन की परंपरा को बनाए रखा।

गुरु अंगद देव जी ने राग सिरी, माझ, आसा, सोरठी, सूही, रामकली, मारू, सारंग, मल्हार में 63 श्लोक पढ़े, जो अलग-अलग वारों में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज हैं।

गुरु अमरदास जी गुरु परंपरा में तीसरे गुरु थे। गुरु साहिब ने शबद कीर्तन की परंपरा को और आगे बढ़ाया और गोइंदवाल साहिब को कीर्तन का सेंटर बनाया। इसके अलावा, गुरु साहिब ने सिख धर्म के प्रचार और विस्तार के लिए 22 मंजी यानी 22 अलग-अलग सेंटर बनाए और 22 काबिल विद्वानों को नियुक्त किया ताकि लोकल संगत अपने लोकल सेंटर से जुड़ी रहे। गुरमत संगीत के विकास के लिए यह एक अच्छी पहल थी।

रागों में सिरी वह राग है, अगर सच्चा प्यार हो। हमेशा सच्चे प्यार में रहो, और मन स्थिर रहे।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पेज 83)

बिलावल ही ऐसा करता है, जब नाम सिर में होता है। राग की आवाज़ सुंदर होती है और शब्दों पर ध्यान लगाना आसान होता है।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पेज 849)

भाई साता बलवंड के अलावा, भाई पधान और भाई बुला गुरु साहिब के समय में रबाबी कीर्तनकार थे। उन्होंने 'सारंडा नाम का इंस्ट्रूमेंट बनाया और गुरमत संगीत के इंस्ट्रूमेंट्स की संख्या बढ़ाई। इसके अलावा, उन्होंने 16 मुख्य रागों और 6 रागों के तहत टिपाड़े, चौपड़े, पंचपड़े, अष्टपदी, छंट, सोलहे, वर, पट्टी, अलहनिया, वरासत, आनंद साहिब की बानियां लिखीं:

मुख्य राग: सिरी (26), माझ (110), आसा (360), गूजरी (490), वधांस (558), सोरठी (599), धनश्री (663), सूही (753), बिलावल (796), रामकली (880), मारू (993), भैरव (1127), बसंत (1172), सारंग (1233), मल्हार (1257), प्रभाती (1332)। राग प्रकार: गौरी गुएरेरी (155), गौरी बैरागनी (162), गौरी पूर्वी (243), आसा काफी (365), बसंत हिंडोल (1177), प्रभाती बिभास (1346)।

गुरु रामदास जी गुरु परंपरा के चौथे गुरु थे। गुरु रामदास जी ने गुरमत संगीत के तहत शबद कीर्तन परंपरा के असर का दायरा और बढ़ाया और अमृतसर में कीर्तन का अगला सेंटर बनाया, जहाँ उन्होंने शबद कीर्तन को प्रैक्टिकल तरीके से फैलाने के लिए इसे हमेशा के लिए स्थापित किया। गुरु जी के समय में, गुरमत संगीत के तहत शबद कीर्तन क्लासिकल और लोक संगीत का मिश्रण था। इनके आधार पर, अलग-अलग बानी के रूप जैसे दुपड़े, चौपड़े, पंचपड़े, छिपड़े, अष्टपदी, पहरे, छंट, वंजारा, वर, घोरिया, पारूल, सोलहे वगैरह गुरु साहिब के मुख्य बानी रूप हैं, जिन्हें नीचे दिए गए 30 मुख्य रागों और 10 रागों के तहत बनाया गया था:

मुख्य राग: सिरी (39), माझ (94), गौरी (300), आसा (365), गुजरी (493), देवगंधारी (527), बिहागरा (538), वधांस (560), सोरठी (604), धनासरी (666), जैतसरी (6), तोड़ी (711), बैराड़ी (719), तिलंग (723), बिलावल (798), गोंड (859), रामकली (850), नट^नारायण (977), माली गौरा (984), मारू (995), तुखारी (1113), केदारा (1108), भैरव (1134), सारंग (1198), मल्हार (1262), कनारा (1294), कल्याण (1319), प्रभाती (1335), सुही (731).

राग के प्रकार: गौरी ग्वारेरी (163), गौरी बैरागनी (165), गौरी पूरबी (169), गौरी माझ (173), आसा काफी (369), आसावरी (369), नट (975), बिलावल मंगल (844), कल्याण भोपाली (132), प्रभाती बिभास (1335).

गुरु अर्जन देव जी के समय तक शबद कीर्तन की यह परंपरा पूरी तरह विकसित हो चुकी थी। दुपड़े, तिपड़े, चौपड़े, पंचपड़े, अष्टपदी, पहरे, छंट, दखना, बारामाह, दीन रीनी, बावन आखरी, परूल, वरन, अंजलि, सोलहे आदि पारंपरिक और स्वदेशी गायन शैलियों पर आधारित गुरु साहिब के गीत निम्नलिखित 30 रागों और 14 रागों में दर्ज हैं: मुख्य राग: सिरी (42), माझ (96), गौरी (186), आसा (370), गुजरी (495), देवगंधारी (528), बिहागरा (537), वधांस (562), सोरठी (608), धनासरी (670), जैतसरी (701), तोड़ी (712), बैराड़ी (720), तिलंग (724), सूही (736), बिलावल (801), गोंड (862), रामकली (882), नट^नारायण (978), मलीगौड़ा (989), मारू (998), तुखारी (1117), केदारा (1118), भैरव (1136), बसंत (1180), सारंग (1202), मल्हार (1266), कनारा (1298), कल्याण (1321), प्रभाती (1339),

राग के प्रकार: गौरी ग्वारेरी (175), गौरी बैरागनी (203), गौरी चेटी (202), गौरी पूर्वी (204), गौरी माझ (217), गौरी मालवा (214), गौरी माला (215), आसा काफी (396), असावरी (409), असावरी सुधांग (369), नट (980)।

यह साफ़ है कि गुरमत संगीत की शबद कीर्तन परंपरा श्री गुरु नानक देव जी से शुरू होकर गुरु अर्जन देव जी तक पूरी तरह से विकसित हुई थी। गुरमत संगीत के विकास के शुरुआती दौर में, शबद कीर्तन परंपरा एक रस्म बन गई थी। इस समय के गुरुओं ने राग सिद्धांत और शब्द सिद्धांत को आध्यात्मिक तरीके से समझाते हुए, अलग-अलग रागों में बानी सुनाई। उन्होंने इस शब्द-प्रधान गायन को अलग-अलग रागों, गायन शैलियों और संगीत नोटेशन के साथ प्रैक्टिस में लाया, जो गुरमत संगीत को अनोखा बनाने में असरदार साबित हुआ।

गुरु हरगोबिंद साहिब जी सिखों के छठे गुरु थे। उनके समय में देश के बदलते राजनीतिक और सामाजिक हालात की वजह से, गुरबानी के साथ-साथ सिखों के पास राजनीतिक निशान के तौर पर 'मीरी और आध्यात्मिकता के निशान के तौर पर 'पीरी नाम की दो तलवारें थीं। इसमें रंग भरने के लिए 'धाड़ी कीर्तन* का रिवाज शुरू हुआ, जो तख्त साहिब के दीवानों से शुरू हुआ। गुरु हरगोबिंद साहिब जी ने गुरमत संगीत में लोक अंग को शामिल करते हुए गुरु ग्रंथ साहिब के 22 में से 9 वारों पर धुनों के नाम लिखे। भाई काहन सिंह नाभा के मुताबिक, 'श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी ने वीरता की भावना बढ़ाने के लिए ये 9 धुनें ढाड़ियों से गवाईं, जो अब तक टकसाली रागी और रबाबी गाते थे।

श्री गुरु हर राय जी गुरु परंपरा में सिखों के सातवें गुरु थे। उनके समय में भी कीर्तन चौकियों का रिवाज जारी रहा और कीर्तन दीवान होते थे। जिसमें कीर्तन के साथ-साथ गुरबानी का महत्व भी समझाया जाता था।

श्री गुरु हर कृष्ण जी गुरु परंपरा में सिखों के आठवें गुरु थे। उनके समय में भी सुबह और शाम कीर्तन का रिवाज उसी तरह जारी रहा। ऐतिहासिक संदर्भों से पता चलता है कि शबद कीर्तन की परंपरा में कई तार वाले वाद्य यंत्र शामिल किए गए थे।

श्री गुरु तेग बहादुर जी गुरु परंपरा में सिखों के नौवें गुरु थे। उनके समय में कीर्तन का रिवाज वैसा ही रहा। उनके समय में कीर्तन का केंद्र आनंदपुर साहिब बना और गुरबानी का संदेश असम और बंगाल तक पहुंचा। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में 31वां राग जैजैवंती रागों की संख्या बढ़ाता है। मृदंगम वाद्य यंत्र को वाद्य यंत्रों की श्रेणी में शामिल किया गया था। गुरु जी की ज़रूरी रचनाओं में टिपाड़े, चौपड़े, अष्टपदी, सलोक वगैरह खास हैं, जो 15 मुख्य रागों और 2 रागों में रची गई हैं:

मुख्य राग: गौरी (219), आसा (411), देवगंधारी (536), बिहागरा (537), सोरठी (631), धनश्री (684), जैतसरी (709), तोड़ी (718), तिलंग (726), बिलावल (830), रामकली (902), मारू (1008), बसंत (1186), सारंग (1231), जैजैवंती (1342)

राग: तिलंग काफी (726), बसंत हिंडोल (11)

गुरु गोबिंद सिंह जी सिखों के आखिरी और दसवें गुरु थे। उन्होंने सिखों के लिए एक अलग पहचान बनाई। दमदमा साहिब में रहते हुए, गुरु जी ने भाई मणि सिंह से नौवें गुरु के भजनों को गुरु ग्रंथ साहिब में इकट्ठा करवाया। दशम ग्रंथ गुरु जी की अनोखी देन है। गुरु जी का म्यूज़िकल वोकैबुलरी और म्यूज़िकल राइम्स का इस्तेमाल उनकी म्यूज़िकल समझ का एक नमूना है। इस समय, आनंदपुर साहिब कीर्तन का सेंटर था। गुरु घर की कीर्तन परंपरा बनी रही जिसमें रागी, रबाबी और ढाडी रेगुलर तरीके से अलग-अलग रागों में ताऊस, मृदंग, रबाब वगैरह जैसे अलग-अलग इंस्ट्रूमेंट्स के साथ गुरबानी गाते थे। एक हिस्टोरिकल रेफरेंस के अनुसार:

रागी रबाबी मिलैकै साज, अलपट रागनी राग अमिताई || तारा पुकारता है, हे बनाने वाले, यह पूरी दुनिया इनफिनिट है।

मंज मंजीरे मृदंग उपंग, ताऊस सतर बाजै बहु भिताई। ग्रैंडहुप किन्नर देव रिखी जानु आए रिझावन को गुर चिताई।

सारंग जैतसारी नटकान्द्रा गौड़ी मलार किदर तुखारी। रामकली श्री राग बिलावल भगवान कल्याण सुदेवा गांधारी।

सोरठ सुही बिहाग तिलंग कमाच हिंडोल बसंत विचारी। गावत थे इत्यादिक राग गव्य मीत हित चोर छोरत चारी।

या बिध नित दीवान लगाई गुरु का जिस को पीख इंदौर रजाई। दीर दुरैड़ बिहीद खरे दर पे मद मत महावर छाजाई।30।

इस तरह गुरु साहिब ने संगीत के अनमोल उपहारों से गुरमत संगीत की विरासत को और मजबूत किया।

महाराजा रणजीत सिंह के समय में रागियों और रबाबियों के अलग-अलग पद बनाए गए थे। महाराजा रणजीत सिंह के समय के मशहूर कीर्तनकारों में भाई मनसा सिंह, ब्रह्मज्ञानी बाबा शाम सिंह, भाई बूरा, भाई मान सिंह, देवा सिंह, मिश्रा सिंह, लेहना सिंह, रतन सिंह, गंडा सिंह, आज्ञा सिंह, बिशन सिंह, बोध सिंह, भाई लाल, भाई अत्रा, भाई दिता जी वगैरह थे।

आज़ादी से पहले खालसा राज का समय: महाराजा रणजीत सिंह के राज के बाद और आज़ादी से पहले, देश में ब्रिटिश राज के साथ, गुरुद्वारों में कीर्तन की परंपरा जारी रही। श्री हरमंदिर साहिब में रागियों और रबाबियों की चौकियां अलग-अलग तरह से बनाई जाती थीं। इसके अलावा, वे बंगलों और परकोटे में कीर्तन करते थे और उन्हें गुरुद्वारों में खास सुरक्षा दी जाती थी। 1841 में, महाराजा शेर सिंह के बाद, श्री हरमंदिर साहिब का मैनेजमेंट लाहौर दरबार के अंडर आ गया। फिर 1849 में सिख गुरुद्वारों का मैनेजमेंट ब्रिटिश लोगों के हाथ में आ गया। जैसे-जैसे अंग्रेजों का दखल दिन-ब-दिन बढ़ता गया, गुरु घर में आने वाले धन-दौलत का कोई हिसाब-किताब नहीं रहा, जिससे सिखों में नाराज़गी बढ़ती गई, जिसने अकाली आंदोलन का रूप लिया, जिसके नतीजे में 1920 में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की स्थापना हुई।

उस समय शुद्ध कीर्तन से लेकर ख्याल गायकी, ध्रुपद गाने का तरीका और कव्वाली अंग तक गाया जाता था। आज़ादी से पहले के कीर्तनकारों में मुख्य थे भाई अत्रा, भाई मोती, भाई खुशी, भाई चंद, भाई मिहर सिंह तन, भाई लाल, भाई देसा, भाई सुंदर, भाई ताबे, रागी बाबा कपूर सिंह, संत सिंह, नरिंदर सिंह बांका, बचित्तर सिंह, भाई प्रताप सिंह वगैरह।

वर्तमान: विकास और वैश्वीकरण आधुनिक युग में, गुरमत संगीत ने न केवल अपने आध्यात्मिक सार को बरकरार रखा है, बल्कि बदलते समय और भौगोलिक स्थितियों के अनुकूल भी विकसित हुआ है। जैसे-जैसे सिख समुदाय दुनिया के विभिन्न हिस्सों में प्रवास करते गए, गुरमत संगीत को विदेशों में नए घर और उत्साह मिले। इस प्रवास के साथ, वाद्य यंत्र का विस्तार हुआ और इसमें विभिन्न प्रकार के तार वाले वाद्य यंत्र शामिल हो गए।

आज, रबाब के साथ-साथ दिलरुबा, ताऊस और सारंगी जैसे वाद्य यंत्रों के उपयोग में परंपरा और नवीनता का मिश्रण देखा जा सकता है। सारंगी के छोटे संस्करण जैसा दिखने वाला दिलरुबा एक बहुमुखी वाद्य यंत्र है जो संगीतकारों को ध्वनियों की एक विस्तृत श्रृंखला का अन्वेषण करने में सक्षम बनाता है। मोर के आकार के अनुनादक की विशेषता वाला ताऊस, गुरमत संगीत प्रस्तुतियों में एक अनूठा दृश्य और श्रवण आयाम जोड़ता है। ये वाद्य यंत्र न केवल संगीत के आध्यात्मिक मूल को बनाए रखते हैं, बल्कि इसे विविध वैश्विक श्रोताओं के लिए और भी सुलभ बनाते हैं।

गुरमत संगीत परंपरा का उद्गम सिख धर्म के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी से माना जाता है| यह परंपरा शुद्ध भक्ति आत्मिक चेतना और संगीतमक अनुशासन पर आधारित है| जिसका मुख्य उद्देश्य मानव आत्मा को ईश्वर से जोड़ना है| देखा जाए तो गुरमत शब्द का अर्थ गुरु की बुद्धि या शिक्षाओं पर आधारित जीवनजांच को अपने व्यवहार में लाना है| गुरमत संगीत वह परंपरा है जो पूर्ण रूप से गुरु की वाणी और शिक्षाओं पर आधारित होती है| श्री गुरु नानक देव जी ने भक्ति को केवल शब्दों तक ही सीमित नहीं रखा बल्कि उसे राग और संगीत के माध्यम से जनसाधारण तक पहुंचाया, आपने स्पष्ट किया के संगीत आत्मा की गहराइयों से जुड़ने का सबसे श्रेष्ठ एवं सरल माध्यम है| इसी उद्देश्य से आपके परम सिख भाई मरदाना जी आपके साथ रहते और रबाब वाद्य यंत्र का वादन करते जब गुरु नानक देव जी कथन करते "मरदानिया रबाब बजा बाणी आई है" तो गुरु नानक देव जी द्वारा रचित वाणी और भाई मरदाना जी की जवाब मिलकर कीर्तन का प्रारंभिक स्वरूप बनाकर बनाया जो के आधुनिक समय में गुरमत संगीत के नाम से व्यवहार में है| यह परंपरासिक धर्म की नींव के साथ-साथ विकसित हुई और धीरे-धीरे एक व्यापक धार्मिक सांस्कृतिक आंदोलन बन गई और इसके विकास में अन्य गुरुओं ने अपना विशेष योगदान प्रदान किया|

गुरमत संगीत के विकास को दृष्टिगोचर किया जाए तो गुरु नानक देव जी के पश्चात उनकी शिक्षाओं और परंपराओं को अन्य साहिबान ने इस विधि विधान से आगे प्रस्तुत किया| श्री गुरु अंगद देव जी ने गुरबाणी लिपिबद्ध कर उसे प्रचार के माध्यम से स्थानीय भाषाओं को अपनाया, श्री गुरु अमर दास जी द्वारा मजियो और पंथो की स्थापना की, जहां कीर्तन के माध्यम से गुरु घर की शिक्षाओं का प्रचार किया गया| इसी परंपरा को और आगे ले जाने में श्री गुरु रामदास जी एवं श्री गुरु अर्जन देव जी ने अहम भूमिका निभाई| जहां गुरु रामदास जी ने अमृतसर नगर की स्थापना कर कीर्तन को सिख धर्म के धार्मिक अनुष्ठानों का प्रमुख अंग बनाया, वहीं1581 से 1606 ई: तक श्री गुरु अर्जन देव जी ने गुरमत संगीत को संस्थागत रचना में रूपांतरित किया जिसके तहत उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का संकलन कर(1504) ई: में 31 रागों के अंतर्गत सिख गुरुओं और संतो, भक्तों की वाणी को संबोधित कर कीर्तन को परंपरा के विधान व्यवस्थित कर उसके नियमों का चयन कर इस कीर्तन परंपरा के नियमों को स्थापित किया और उन्हें नियमों के अनुसार आज श्री हरमंदिर साहिब अमृतसर में कीर्तन परंपरा का निर्वाह किया जा रहा है| इन्हीं नियमों के अनुसार गुरबाणी संगीत के शबद को एक विशेष राग तल एवं शैली में गायन किया जाएगा निश्चित किया गया, जो की गुरमत संगीत के विकास में सबसे अहम घटना थी| श्री गुरु अर्जन देव जी ने कीर्तन परंपरा में कई अन्य वाद्य को भी शामिल किया जिसमें तानपुरा, दिलरुबा, ताऊस एवं जोड़ी और पखावज| श्री गुरु अर्जन देव जी के पश्चात श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी ने इस गुरमत संगीत में शौर्य और वीर रस को भी जोड़ा, जिससे वह केवल भक्ति का ही नहीं प्रेरणा का स्रोत भी बना| इसी कड़ी को जोड़ते हुए श्री गुरु तेग बहादुर जी ने धार्मिक रचनाओं के माध्यम से करुण रस और आत्मिक भावनाओं को व्यक्त किया|श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने गुरमत संगीत परंपरा को धार्मिक और सैनिक प्रशिक्षण दोनों में प्रयुक्त किया और वीर रस से उत्प्रेरित दशम ग्रंथ की वाणी की रचना की| सिख साम्राज्य काल में महाराजा रणजीत सिंह ने हरमंदिर साहिब में रागियों की सेवा को संगठित किया एवं उनकी सेवा में भी बढ़ोतरी की, इसी तरह से उदासीन,निर्मले और निहंग परंपराओं से जुड़े संगठनों में भी गुरमत संगीत ने अहम भूमिका निभाई| 20वीं सदी में गुरमत संगीत अकादमियों और विश्वविद्यालयों की स्थापना में शिक्षक की दृष्टि में बहुत विकास हुआ|

गुरमत संगीत गायन शैलियाँ सिख उपासना और धार्मिक समारोहों में एक केंद्रीय भूमिका निभाती हैं। ये गुरुद्वारा सेवाओं, कीर्तन (भक्ति गायन) और धार्मिक समारोहों का एक अभिन्न अंग हैं। शैलियों का पाठ और गायन भक्ति और श्रद्धा का वातावरण बनाने में मदद करता है, जिससे सिख ईश्वर से जुड़ते हैं और अपनी आध्यात्मिक मान्यताओं को सुदृढ़ करते हैं।

शैलियों के साथ अक्सर पारंपरिक वाद्य यंत्र जैसे हारमोनियम, तबला और दिलरुबा बजाया जाता है, जो रचनाओं की गहराई और सुंदरता को बढ़ाते हैं। गुरुद्वारा सेवाओं के दौरान मण्डली सक्रिय रूप से शैलियाँ गायन में भाग लेती है, जिससे सिखों में सामुदायिकता और आध्यात्मिक एकता की भावना का विकास होता है।

संरक्षण और समकालीन प्रासंगिकता:

आधुनिक युग में, गुरमत संगीत गायन शैलियाँ तेजी से विविधतापूर्ण और वैश्वीकृत होती दुनिया में संरक्षण और संवर्धन की चुनौती का सामना कर रही हैं। इस पवित्र संगीत परंपरा के निरंतर प्रसार को सुनिश्चित करने के लिए सिख संगठनों, संगीतकारों और विद्वानों द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं। रिकॉर्डिंग, पुस्तकें और ऑनलाइन संसाधन गुरमत संगीत के ज्ञान और अभ्यास के प्रसार में महत्वपूर्ण साधन बन गए हैं।

इसके अलावा, गुरमत संगीत गायन शैलियों की समकालीन प्रासंगिकता धार्मिक संदर्भों से परे भी फैली हुई है। उनकी मधुर सुंदरता और गहन बोलों ने संगीत की व्यापक दुनिया में पहचान और सराहना प्राप्त की है, और विविध पृष्ठभूमि के श्रोताओं को आकर्षित किया है।

आज गुरमत संगीत डिजिटल माध्यम में ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और रिकॉर्डिंग्स के माध्यम से विश्व भर में पहुंच गया है| जिसका श्रेय पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला को जाता है जिन्होंने इस कार्य को बहुत कुशलता एवं परिश्रम से निभाया चाहे आधुनिक समय में हरमोनियम जैसे वाद्य यंत्रों का स्थान बड़ा है किंतु पारंपरिक वाद्य तानपुरा, दिलरुबा, ताऊस एवं जोड़ी और पखावज आदि के नतीजे भी सामने आ रहे हैं|

निष्कर्ष

आज के समय में, गुरमत संगीत की पहचान एक आज़ाद और असली परंपरा के तौर पर बनी है। इसका सबूत यह है कि गुरमत संगीत को स्कूल, कॉलेज और यूनिवर्सिटी में एकेडमिक लेवल पर एक सब्जेक्ट के तौर पर लागू किया गया है। जिससे गुरमत संगीत में म्यूज़िकल जॉनर और रागों की ट्रेनिंग और रिसर्च के नज़रिए से पढ़ाई हो रही है, जो गुरमत संगीत के विकास के लिए कंस्ट्रक्टिव कोशिशें हैं। हालांकि गुरमत संगीत की शबद कीर्तन परंपरा सिख धर्म का एक बुनियादी हिस्सा रही है, लेकिन फिर भी इसके प्रैक्टिकल रूप की असलियत में कई बदलाव आए हैं। कुछ हद तक, गुरुओं से विरासत में मिली शबद कीर्तन की परंपरा, गुरमत संगीत, अपने मूल से भटककर कई धाराओं में बहने लगी।

गुरमत संगीत परंपरा का उद्गम एवं विकास एक आध्यात्मिक यात्रा रही है यह केवल धार्मिक अनुष्ठान की विधि ही नहीं बल्कि आत्मा को जागृत करने वाली एक आध्यात्मिक साधना, एक दर्शन और एक जीवन पद्धति बन चुकी है| श्री गुरु नानक देव जी से आधुनिक समय तक इस संगीत परंपरा ने न केवल सिख धर्म की आत्मा को जीवित रखा है बल्कि संगीत और आत्मा के अध्यात्म के अद्वितीय संगम का उदाहरण प्रस्तुत किया है|

संदर्भ सूची

1. गुरनाम सिंह (डॉ.), गुरमत संगीत: प्रबंध ते पासर, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 2000।
2. विद्यार्थी, देविंदर सिंह, गुरबानी और राग: संबंध और प्रासंगिकता, खालसा कॉलेज, सिख इतिहास अनुसंधान विभाग, 1986।
3. गोसल ए.एस., सिख धर्म और संगीत, पंजाब स्टेट यूनिवर्सिटी ट्रस्ट बुक बोर्ड, चंडीगढ़, 1982।
4. काह्न सिंह नाभा (भाई), महान कोष (गुरु शब्द रत्नाकर), भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला, 1976।
5. गुरनाम सिंह (डॉ.), आदि ग्रंथ राग कोश, पवित्र प्रमाण प्रकाशन, पटियाला, 1983।
6. Singh G.N- the philosophy of Sikhism
7. Kaur G. GURMAT SANGEET, A study of music tradition of Sikhism.
8. Shri guru granth sahib, raag anusar anukramnika.
9. Punjabi university Patiala, shodh patar.